# तीन सत्य

आध्यात्मिक जीवन, चाहे किसी का भी हो, बहुत श्रेष्ठ और उत्तम होता है। कभी कभी अपनी जाँच करते हुए, अपने गुणों का विकास करते हुए, शाश्वत प्रयोजनो के लिए प्रयत्न करते हुए ज़िन्दगी का रास्ता मधुर हो जाता है।

एक सिद्धान्त देखिए–पहला सच है–

"We wont get what we desire!
We will get only what we deserve !"

अर्थात् हम जो चाहते है वह हमें नहीं मिलता। हम जो पाने योग्य हैं वही, हमें मिलता है।

अब आगे चल कर दूसरा गहरा सच जान लेते हैं–

"We wont get what we deserve !
We well get only what we need!"

हमें अपनी योग्यतानुसार यदि कुछ नहीं मिल रहा तो अपनी आवश्यकतानुसार अवश्य मिलता है।

इस भौतिक शरीर को ही 'मैं' समझने के भ्रम से दूर होकर जब हम यह समझने लगते है कि मैं आत्म स्वरूप हूँ, तब आत्म परिणति से ज़्यादा श्रेय क्या है? तब से ऐसी इच्छाएँ जो हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए उपयोगी हैं, ही सफल होती हैं, शेष रह जाती है।

और आगे चल कर हम तीसरे सच को देखते हैं जो सबसे बड़ा है–

"We wont get what we need!
We will get only those that are
needed for the society through us.

अपनी आवश्यकताएँ पूरी न हाने पर भी, समाज की प्रगति के लिए जो ज़रूरी है वह सफल हो जाएगा।

एक ध्यानी और योगी के रूप में अपने जीवन को गहराई से देखने के बाद एक आत्मज्ञानी को किसी भौतिक या आध्यात्मिक आवश्यकता की दरकार ही नहीं रहती। हमारे भीतर जो ब्रहमपदार्थ हैं वह समस्त प्रणिया में प्रकाशित हो रहा है–इसे समझने वाले ब्रह्मज्ञानी को किसी से कोई सरोकार नहीं रहता।

सच्चा ज्ञानी अपने वातावरण और समाज को ठीक करने के कार्य में डूबा रहता है। वह जान जाता है कि समाज की उन्नति के लिए जो उपयुक्त है, वही मुझे मिलता है, अपने लिए कुछ नही मिलता।